प्रश्नस्कन्ध

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

प्रश्न का अर्थ है-पूछताछ, अनुसन्धान आदि। यह वस्तुतः फलित ज्योतिष का ही अंग था किन्तु कालान्तर में प्रश्नशास्त्र पृथक् रूप से स्वतन्त्र रचित रचनाओं के कारण एक भिन्न विभाग के रूप में हमारे समक्ष उपलब्ध हुआ।

ज्योतिषशास्त्र में प्रश्नशास्त्र का विशेष महत्त्व है। कुछ आचार्य प्रश्नशास्त्र को जातक (होरा) शास्त्र का तथा अन्य आचार्य इसे संहिता का भेद मानते हैं। प्रश्न सम्बन्धी विषय की आवश्यकता प्रायः सर्वत्र सभी को करनी पड़ती है। जातक के विचार हेतु शुद्ध जन्म काल की आवश्यकता होती है किन्तु प्रश्नकुण्डली के लिए जन्मकाल का ज्ञान आवश्यक नहीं है। जिस समय किसी भी कार्य के निमित्त प्रष्टा शुभाशुभ जानने के लिए प्रश्न करे उसी समय को इष्टकाल मानकर जन्मकुण्डली की भाँति प्रश्न कुण्डली बनाकर ग्रह स्पष्ट, नवमांश आदि बनाकर प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए। वराहमिहिराचार्य आदि समस्त आचार्यों का मत है कि जातकशास्त्र के सभी नियमों का प्रयोग प्रश्न कुण्डली में किया जा सकता है।

यह शास्त्र तत्फल बताने वाला शास्त्र है। इसमें प्रश्न का फल बताने की रीतियों में प्रश्नाक्षर सिद्धान्त, प्रश्नलग्न-सिद्धान्त तथा स्वरविज्ञान सिद्धान्त वर्णित है। कुछ लोग प्रश्नकालीन लग्न के अनुसार फल बताते हैं, इसीलिए प्रश्न होरास्कन्ध का एक अंग कहा जा सकता है।

प्रश्नशास्त्र की महत्ता बताते हुए कहा गया है कि पूर्वजन्म में किए गए और इस जन्म में किए गए कर्मों का विभाग का ज्ञान कराने के लिए प्रश्नशास्त्र प्रवृत्त हुआ।

प्रश्नविद्या को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है-वाचिक प्रश्न, मूक प्रश्न तथा मुष्टि प्रश्न। इस विद्या के नियमों के विषय में कहा गया है कि प्रश्नकर्ता को अमुक पदार्थ लेकर आदरभाव से ज्योतिषी के समीप जाकर प्रश्न करना चाहिए। प्रश्न राह पर चलते-चलते अथवा सभा में नहीं करना चाहिए। ज्योतिषी

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

के लिए यह निर्देश भी दिए गए है कि वह प्रश्नकर्ता के हाव-भाव, चेष्टा, अंगस्पर्श, स्थान, प्रश्न के मध्य व प्रारम्भ में ध्वनि आदि का भी सूक्ष्म रूप से निरीक्षण करके ही उचित फल का कथन करे।

वस्तुतः प्रश्न ज्योतिष, ज्योतिष कि वह कला है जिससे मनुष्य अपने मन की कार्यसिद्धि को जानने का प्रयत्न करता है। कोई घटना घटित होगी या नहीं, यह जानने के लिए प्रश्न लग्न देखा जाता है। प्रश्न ज्योतिष में उदित लग्न के विषय में कहा जाता है कि लग्न मे उदित राशि के अंश अपना विशेष महत्त्व रखते है। प्रश्न ज्योतिष में प्रत्येक भाव, प्रत्येक राशि अपना विशेष अर्थ रखती है। ज्योतिष की इस विधा में लग्न में उदित लग्न, प्रश्न करने वाला स्वयं होता है। सप्तम भाव उस विषय वस्तु के विषय का बोध कराता है जिसके बारे मे प्रश्न किया जाता है। प्रश्न किस विषय से सम्बन्धित है यह जानने के लिये जो ग्रह लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता है, उस ग्रह से जुडा प्रश्न हो सकता है या जो ग्रह कुण्डली में बलवान हो लग्नेश से सम्बन्ध बनाये उस ग्रह से जुडा प्रश्न हो सकता है। प्रश्न कुण्डली में प्रश्न का समय बहुत मायने रखता है, इसलिए प्रश्न का समय कैसे निर्धारित किया जाता है इसे अहम विषय माना जाता है।

प्रश्न कुण्डली का विचार करते समय देश भेद, प्रष्टा की परिस्थिति, प्रष्टा की चेष्टाएं, शारीरिक गतिविधि, हाव-भाव, दिशा, उच्चारण, उसकी अवस्था, मुद्रा, ग्रहगणित तथा अन्य बातों का सूक्ष्मता से निरीक्षण कर शुभाशुभ फल बताने वाला ज्योतिषी कभी उपहास का पात्र नहीं होता। एक विशेष बात का विशेष ध्यान दैवज्ञों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि प्रष्टा द्वारा जितना प्रश्न किया जा रहा हो उतने का सन्तुलित उत्तर देना चाहिए।उत्साह में आकर प्रश्नातिरुक्त उत्तर देने से ज्योतिषी तत्क्षण तो प्रसन्न हो सकता है किन्तु कालान्तर में हंसी का पात्र बन जाता है। दूसरी मुख्य बात यह है कि उत्तर का ज्ञान होत हुए भी बिना पूंछे उत्तर नहीं देना चाहिए। यह तो नीति वाक्य भी है-'नापृष्टं कस्यचिद् ब्रूयात्'। सभा के मध्य में यदि प्रश्न पूछा गया हो, कपटपूर्ण प्रश्न हो, किसी के अहित के लिए प्रश्न पूंछा गया हो, परीक्षा लेने के लिए प्रश्न किया जा रहा हो, सूर्यास्त के बाद यदि प्रश्न किया जा रहा हो, अन्यमनस्क होकर प्रश्न पूंछा जा रहा हो अथवा शीघ्रता से उत्तर चाहा जा रहा हो तो इन समस्त प्रश्नों का उत्तर ज्योतिषी को नहीं देना चाहिए। नीच, पाखंडी, धूर्त, अश्रद्धालु तथा उपहासक के प्रतिप्रश्नज्ञान सत्यघटित नहीं होता है। किन्तु

भक्त, पीड़ित, दीनमुख, निर्धन तथा श्रद्धालु यदि इनके प्रश्नों का उत्तर दैवज्ञ नहीं देता है तो शीघ्र ही उसका ज्ञान विफल हो जाता है-

भक्तार्तदीनवदने दैवज्ञो न दिशेद्यदि।

विफलं भवति ज्ञानं तस्मात्तेभ्यः सदा वदेत्।।

अतएव जिज्ञासु एवं अत्यन्त दुःखित व्यक्ति के लिए सदैव सर्वकाल में प्रश्नों का समाधान करना चाहिए।

किसी भी प्रश्न पर विचार करते समय निम्नलिखित तथ्यों पर विशेष ध्यान देना चाहिए-

1. प्रश्न लग्न की राशि, चर, स्थिर, द्विस्वभाव तथा पृष्ठोदय, शीर्षोदय अथवा उभयोदय किस राशि की है। राशियों का तत्त्व, दिशा, स्वभाव तथा राशि सम्बन्धी अन्य बातों पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए।
2. चन्द्रमा की स्थिति, बली, निर्बल का विचार, स्थानबल, कालबल आदि का विचार, चन्द्रमा के शुभत्व, अशुभत्व का विचार धैर्यपूर्वक करना चाहिए।
3. लग्नेश एवं कार्येश ग्रहों की स्थिति की स्थिति तथा बलाबल का विचार।
4. नक्षत्र तथा नक्षत्रेश का विचार, नक्षत्रों की ध्रुवादि अन्य मन्दादि संज्ञाएं प्रत्येक ग्रहों की नक्षत्रस्थिति का पूर्ण विचार करना चाहिए।
5. नवांश का विचार, कार्येश एवं लग्नेश के नवांश वर्गोत्तम आदि का विचार।
6. कारक ग्रहों का विचार तथा किस भाव का कौन ग्रह कारक है तथा चर, स्थिर दोनों प्रकार के कारक एवं अकारक ग्रहों का सूक्ष्म अध्ययन कर फलादेश करना चाहिए।
7. भाव, लग्नेश तथा भाव सम्बन्धी ग्रहों की स्थिति का गहनता से विचार करना चाहिए।
8. ताजिक में वर्णित षोडश योगों का विचार कर फलादेश करना चाहिए।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

9. स्थान, स्वर, उच्चारण, आद्यक्षर, संकेत, शकुन, पृच्छक की शारीरिक स्थिति, देश, काल परिस्थिति, चेष्टा तथा अन्य बातों का विस्तारपूर्वक मनन करके फलादेश करने से ज्योतिषी की प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

फलविचार-

जिस समय किसी कार्य के लाभालाभ, शुभाशुभ जानने की इच्छा हो, उस समय का इष्टकाल बनाकर प्रश्नकुण्डली, ग्रहस्पष्ट, भावस्पष्ट, नवमांश कुण्डली और चलित कुण्डली बनाकर विचार करना चाहिए। यहाँ प्रश्नकुण्डली से सम्बन्धित कतिपय स्थितियों का विवेचन किया जा रहा है।

1. प्रश्नलग्न में चर राशि हो, लग्नेश और कार्येश बलवान हों, शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हों तथा केन्द्र या त्रिकोण स्थान में अथवा लाभ स्थान में स्थित हों तो अविलम्ब कार्य सिद्ध होता है। यदि कार्येश और लग्नेश बलवान न हों, निर्बल हों तो भी कार्य सिद्ध होता है किन्तु विलम्ब से।
2. यदि प्रश्न लग्न में स्थिर राशि हो तथा लग्नेश एवं कार्येश बलवान हों तो विलम्ब से कार्य सिद्ध होता है। यदि लग्नेश-कार्येश निर्बल हों और स्थिर लग्न हो तो कार्यसिद्धि में व्यवधान होता है।
3. यदि द्विस्वभाव राशि का लग्न हो तथा केन्द्र त्रिकोण में बलवान पापग्रह हों, लग्नेश एवं कार्येश निर्बल हों तो कार्य की हानि होती है। किन्तु पापग्रह त्रिषड, अष्ट, लाभ, व्यय में हों शुभग्रह केन्द्र, त्रिकोण में हो, लग्नेश-कार्येश बली हों तो विलम्ब से कार्य सिद्धि होती है।
4. प्रश्नकाल में जो भाव अपने स्वामी से युत या दृष्ट हो अथवा जो भाव शुभग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो उस भाव की वृद्धि होती है अर्थात् उस भाव से सम्बन्धित प्रश्न की सफलता होती है। किन्तु यदि जो भाव अपने स्वामी से युत अथवा दृष्ट न हो तथा पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो उस भाव की हानि होती है।
5. यदि लग्न में शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र, पूर्ण चन्द्रमा) हों या शुभ ग्रहों का वर्ग लग्न में हो, शीर्षोदय राशि का लग्न हो तो कार्य सिद्धि अविलम्ब होती है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

6. यदि पापग्रह (मंगल, सूर्य, शनि, राहु, केतु) लग्न में हों अथवा पापग्रहों का वर्ग लग्न हो, पृष्ठोदय राशि का लग्न हो तो कथमपि कार्य सिद्धि नहीं होती।
7. यदि शुभ ग्रह एवं पाप ग्रह दोनों का सम्बन्ध हो तो विलम्ब एवं कष्ट से कार्य बनता है।
8. पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तथा गुरु अथवा शुक्र से दृष्ट तो कार्य सिद्धि शीघ्र होगी। नष्ट वस्तु की प्राप्ति शीघ्र होगी।
9. लाभ भाव में शुभ ग्रह हों तथा बली हों तो अवश्य ही कार्य सिद्ध हो जाता है।
10. प्रश्नकालिक लग्न से यदि शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण स्थानमें हो तथा पाप ग्रह केन्द्र तथा आठवें स्थान से अतिरिक्त स्थान में हो तो प्रश्नकर्ता के अभीष्ट कार्य की सिद्धि अवश्य होती है। इसके विपरीत अर्थात् केन्द्र, त्रिकोण में पाप ग्रह हों और केन्द्र त्रिकोण, अष्टम से अन्यत्र किसी स्थान में शुभ ग्रह हों तो प्रश्नकर्ता के अभीष्ट कार्य की हानि होती है।
11. प्रश्नकालिक लग्न से तीसरे, पाँचवें, सातवें और ग्यारहवें शुभ ग्रह हों तो शुभ फल देते हैं, यदि इन स्थानों में पापग्रह हों तो अशुभ फल देते हैं।
12. यदि मिथुन, कन्या, तुला एवं कुम्भ राशि प्रश्नकाल की लग्न हो तो और शुभ ग्रह से युक्त हो अथवा दृष्ट हो तो शुभ फल होना चाहिए।
13. यदि प्रश्नकालिक लग्न से शुभ ग्रह सातवें या दशवें स्थान में हो तो स्थान लाभकारक योग होता है।
14. प्रश्न लग्न से दूसरे तथा पाँचवें ग्रह शुभ हों तो मान-सम्मान एवं धन देते हैं।
15. यदि पाप ग्रह लग्न में हो तो अशुभ, दशम में हो तो शुभ फल होता है।
16. प्रश्न लग्न से 2, 3, 7, 10, 11 स्थान में चन्द्रमा हो, गुरु या शुक्र से दृष्ट हो तो स्त्री के द्वारा लाभ होता है।
17. प्रश्न लग्न से 3, 5, 8, 9 स्थानों में पाप ग्रह कार्य की हानि तथा शुभ ग्रह कार्य की सिद्धि करते हैं।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

18.प्रश्नलग्न में पापग्रह की राशि हो, लग्न पापग्रह से युत या दृष्ट हो या अष्टम स्थान में चन्द्रमा अथवा पापग्रह हों तो रोगी का मरण होता है।

19.प्रश्नलग्न से सातवें स्थान में पापग्रह हों तो रोगी को महाकष्ट और शुभग्रह हों तो रोगी स्वस्थ होता है। सप्तम स्थान में शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह हों तो मिश्रित फल मिलता है।

20. लग्नेश निर्बल हो, अष्टमेश बली हो और चन्द्रमा छठे या आठवें भाव में हो अथवा अष्टम में शनि, मंगल से दृष्ट हो तो रोगी की मृत्यु होती है।

21.लग्नेश बलवान तथा अष्टमेश निर्बल हो तो रोगी का रोग जल्दी अच्छा हो जाता है।

22.यदि प्रश्न के समय अष्टम भाव में सूर्य और शनि सिंह, मकर या कुम्भ राशि में स्थित हों तो सन्तान का अभाव समझना चाहिए। चन्द्रमा और बुध अष्टम में स्थित हों तो विलम्ब से एक सन्तान की प्राप्ति होती है। चन्द्रमा के बलवान होने से कन्या सन्तान होती है। यदि अष्टम में केवल बुध स्थित हो तो सन्तान का अभाव होता है। शुक्र और गुरु अष्टम स्थान में स्थित हों तो सन्तान उत्पन्न होने के अनन्तर उसकी मृत्यु हो जाती है। मंगल अष्टम में हो तो गर्भपात हो जाता है। यदि द्वादश भाव का स्वामी केन्द्र में हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों तो एक दीर्घजीवी बालक उत्पन्न होता है।

23. विवाद के प्रश्न में यदि लग्न में पापग्रह हो तो प्रश्नकर्ता निश्चयतः उस मुकदमा में विजयी होगा। सप्तम भाव में नीच ग्रह के रहने से मुकदमे में विजय लाभ नहीं होता। लग्न और सप्तम में क्रूर ग्रहों के रहने से मुकदमा वर्षों चलता है और कई वर्षों के बाद वादी की विजय होती है।

24.प्रश्नकुण्डली में लग्न मं सूर्य, गुरु या मंगल हो अथवा ये ग्रह 3/5/7/9वें स्थान में हो तो पुत्र और अन्य कोई ग्रह इन स्थानों में हो तो कन्या का जन्म होता है।

उपर्युक्त विवेचन से ज्योतिषशास्त्र की विकासयात्रा में प्रश्नस्कन्ध का अत्यधिक महत्त्व है और इसका आश्रय ग्रहणकर नानाविध समस्याओं का समाधान सहजतापूर्वक किया जा सकता है।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi